nwda.gov.in

साल 2100 तक ग्लेशियर अपने वॉल्यूम का एक तिहाई से आधा तक खो सकते हैं

65% तेज़ी से पिघल रहे हैं ग्लेशियर, बड़ी आबादी पर छा सकता है संकट : रिपोर्ट

■ **पीटीआई, नई दिल्ली:** वैज्ञानिकों ने मंगलवार को चेतावनी दी कि क्लाइमेट चेंज के कारण लगभग दो अरब लोगों को पानी उपलब्ध कराने वाले हिमालयी ग्लेशियर पहले से कहीं अधिक तेजी से पिघल रहे हैं। इससे समुदायों को अप्रत्याशित और महंगी आपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। इंटरनैशनल सेंटर फॉर इंटिग्रेटेड माउंटेन डिवेलपमेंट (ICIMOD) की रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले दशक की तुलना में 2011 से 2020 तक ग्लेशियर 65 प्रतिशत तेजी से पिघले हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, क्लाइमेट चेंज की वजह से आई तेजी

रिपोर्ट के मुताबिक, जैसे-जैसे गर्मी बढ़ेगी, बर्फ पिघलेगी, जिसकी उम्मीद थी। मगर जो अप्रत्याशित और बहुत चिंताजनक है वह स्पीड है। यह कहीं अधिक तेजी से हो रहा है।' इसके मुताबिक, हिंदू कुश हिमालय (HKH) क्षेत्र में ग्लेशियर पर्वतीय क्षेत्रों में लगभग 24 करोड़ लोगों के साथ-साथ नीचे नदी घाटियों में अन्य एक अरब 65 करोड़ लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण जल स्रोत हैं। हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखलाएं शामिल हैं और ध्रुवीय क्षेत्रों से इतर पृथ्वी पर बर्फ की सबसे अधिक मात्रा है।

ग्लेशियर के पिघलने से करीब दो अरब लोगों के जीवन और आजीविका पर असर पड़ेगा।

नेपाल में मौजूद इंटरनैशनल सेंटर फॉर इंटिग्रेटेड माउंटेन डिवेलपमेंट की रिपोर्ट के मुताबिक, ग्लेशियर सदी के अंत तक अपनी वर्तमान मात्रा का 80 प्रतिशत तक खो सकते हैं। एशिया में दो अरब लोग के ग्लेशियर और बर्फ के पानी पर निर्भर हैं। ग्लेशियरों के पिघलने से बड़ी आबादी पर संकट आ सकता है। ग्लेशियरों के साल 2100 तक अपनी मात्रा का एक तिहाई से आधा खोने की उम्मीद है। 1800 के दशक के मध्य के बाद से दुनिया औसतन लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस गर्म हुई है। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने की चेतावनी दी, जिससे भीषण बाढ़ और हिमस्खलन होगा। इससे लगभग दो अरब लोगों के जीवन और आजीविका पर असर पड़ेगा।